IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

जानकीजीवनम् महाकाव्य में जानकी का चारित्रिक वैशिष्ट्य

डॉ सुमन जैन
व्याख्याता भारती कॉन्वेंट स्कूल श्री श्रीगंगानगर

जानकीजीवनम् महाकाव्य में सर्वाङ्गसुन्दर सीता राम कथा का पल्लवन हुआ है। पात्रों के चरित्र–विकास में भारतीय संस्कृति का स्वरूप अभिव्यंजित हुआ है। नायिका प्रधान इस महाकाव्य में नायिका सीता का चरित्र समधिक मधुर एवं भास्वर रूप में उभरकर आया है। माता–पिता का जानकी के प्रति बरसता वात्सल्य, पति का निश्छल प्रेम, सखियों का अपनत्व, प्रजाजनों का आदर, प्रतिनायक प्रदत्त पीड़ा में चरित्र की उज्ज्वलता, दुष्ट रजक द्वारा लांछित शल्य एवं पुत्रों के प्रति स्नेह ने मिलकर जानकी जी के चरित्र को धरा–सा पुनीत सहिष्णु बना दिया है।

नायिका सीता –

सीता उदात्त गुणों से सम्पन्न 'स्वकीया', 'मुग्धा',[1] नायिका है। सीता अनुपमेय गुणों से सम्पन्न, पतिव्रता, कुलीन सन्नारी है। मृदुभाषिणी, गृहकार्यों में कुशल, पति अनुगामिनी, दया दाक्षिण्य गुणों से युक्त नारी रत्न है।[2] **रूपशील गुण विनयविभूतिं स्वयंवृतां कनाङ्गीम्।**

आचार्य विश्वनाथ ने कहा है, महाकाव्य की नायिका नायक के यथासम्भव गुणों से युक्त होती है –

अथ नायिका त्रिभेदा स्वान्या साधारणा स्त्रीति।
नायक सामान्य गुणैर्भवति यथासंभवैर्युक्ता।।[3]

जानकी जी के चरित्र का शोभन वर्णन प्रस्तुत है –

1. **देवोपम सौन्दर्य सम्पन्न –** सीता अद्भुत सौन्दर्य सम्पन्न है। अत्यन्त सुन्दर जानकी जी को जो भी देखता है वह अपलक निहारता ही रहता है। लावण्य सिन्धु के मंथन से उद्भुत लक्ष्मीस्वरूपा सीता का सौन्दर्य चमत्कृत कर देने वाला है –

सीतेति नाम रुचिरं रुचिरानना सा,
दीप्यत्कपोलकल कान्ति जित प्रवाला।

[1] दशरूपक – 2/141/2
[2] विनयार्जवादियुक्ता गृहकर्मपरा पतिव्रता स्वीया। सा.द. – 3/56/1/2
[3] साहित्य दर्पण – 3/56

चाम्पेयपुष्प परिपाण्डुरकोमलाङ्गी,
साक्षादसौ मधुजितौऽनुगतैव लक्ष्मीः।
तां सुन्दरीं परिणयेच्छृणु रामभद्र!
नारायणः स्वयमथौ यदि वा तदंशः।।[1]

2. **श्रेष्ठ पतिव्रता** – सीता राम के द्वितीय प्राण के समान, पवित्र आचारण वाली और प्रिय पर सर्वात्मना अर्पित पतिव्रता है –

विभवेन बभूव यत्सुखं ननु पीडा तव पीडया ध्रुवम्।
श्वसितैश्च तथैव जीविता तव सीता धरा सी।।[2]

धरासी धरणिजा वनवास के कंटकों को सहती हैं और सुमन–सी प्रफुल्लित रहती हैं। दशानन का अपार ऐश्वर्य व राक्षसी विकरालता भी सतीत्व के शुभ पथ से सीता को डिगा नहीं पाये।[3] सीता को पति के अतिरिक्त किसी को स्पृहा, दर्शन प्रणय–याचना कदापि स्वीकार नहीं। सीता अपनी अङ्गतालिका को रावण की कुदृष्टि से निहारने पर इतनी व्यथित है कि वह इसे भस्मसात ही कर देना चाहती है।[4]

3. **दिव्यता** – सीता अलौकिक गुणों से मण्डित धरा की गोद से अवतरित हुई है। देवोपम सौन्दर्य, शील सदाचार की उत्कृष्टता, प्रकृष्ट सहनशक्ति, अनुपम पतिव्रत, चरित्र का गौरव उनके चरित्र की दिव्यता को दर्शाते हैं। उनका जन्म ही दिव्य है।[5] धरा से प्रगट हुई हैं। चरित्र की पावनता प्रमाणित करने हेतु धधकती अग्निशिखाओं में प्रवेश कर जाना।[6] साक्षात् अग्निदेव ने सीता के स्पर्श से स्वयं को पावन अनुभव किया और साक्ष्य दिया। देवों से अभ्यर्चित सीता निःसंदेह दिव्य है –

विदेहजां भूमिसुतामयोनिजामवेहि लक्ष्मीं कमलालयां ध्रुवम्।
न मानवी सा न च मानवो भवान् उभावपि स्वर्ग विहारिणौ जनौ।।[7]

[1] जा.जीवनम् – 4/42,43
[2] जा.जी. – 12/20
[3] जा.जी. – 11/101, 12/68, 12/69
[4] जा.जी. – 12/79, 80
[5] जा.जी. – 1/45, 46
[6] जा.जी. – 15/70, 80
[7] जा.जी. – 15/79

4. **मुग्धा –** सीता 'स्वकीया' मुग्धा नायिका है।[1] मुग्धा नायिका की यह विशिष्टता है कि वह प्रियतम के समक्ष कुछ भी कह नहीं पाती,[2] समधिक लज्जाशील व नवयौवना बस हृदय में प्रणय भावना को अनुभूत करती है। इसी तरह सीता राम के समक्ष कुछ बोल नहीं पाती।

न च संसार पुरो न च पृष्ठो न खलु दक्षिणतो न च वामतः।
उपरि नैव ददर्श न वाप्यधो ह्चलमूर्तिरिवाजनि जानकी।।[3]

जानकीजीवनम् महाकाव्य में सीता की मुग्धावस्था का चारू प्रस्फुटन है –

अग्रेसरीकृत्य पदद्वयं सा बाला क्वचित्साध्वसमन्दवेगा।
पश्चात्पदंन्वेकमुपाययौ यज्जिगाय तेनैव तु शम्बरारिः।।[4]

इसी प्रकार

पदनखाग्रसमुद्धृतरेणुभिर्निजमनोरुजामपलापिनी।
लघुमुहूर्तमितं समयं तदा युगमिवानुबभूव विदेहजा।।[5]

5. **तेजस्विनी –** बलपूर्वक अपहृत सीता को दशानन ने अशोक वाटिका में रखा तथा बारम्बार कामयाचना करने सीता के पास पहुँच जाया करता। उस समय धरासुता का तेजस्वी स्वरूप पूर्ण भास्वरता के साथ प्रगट हुआ, जिसकी दीप्ति के सामने दशानन भी भयभीत हो जाया करता। यथा –

स विलोक्य विदेहजां ज्वलन्मणिभूषामिव ह्रध भीषणाम्।
भुजगस्य भिया शशाक नो सहसा स्वीयवचांसि जल्पितुम्।।[6]

विषधर सर्प की ज्वलन्तमणिभूषा के समान रमणीय एवं भीषण वैदेही को देखकर अकस्मात् रावण अपने उद्गारों को प्रकट करने में भय के मारे समर्थ नहीं हो सका। कैसा आश्चर्य है! जिसके भय से तीनों लोक थर्राते हैं। देवराज, देवगण एवं दिक्पाल, जिसकी सेवा में उपस्थित रहते हैं, त्रिलोक विजयी रावण सीता से भयभीत है।[7] यह तो सीता की नार्योचित गरिमा है, तेजस्विनी वीराङ्गना की आभा।

---

[1] प्रथमावतीर्णयौवन मदनविकारारतौवामा। कथिता मृदुश्च नही समधिक लज्जावती मुग्धा।। सा.द. – 3/58
[2] जा.जी. – 6/50, 7/81, 82, 9/63
[3] जा.जी. – 6/57
[4] जा.जी. – 7/81
[5] जा.जी. – 9/63
[6] जा.जी. – 12/51
[7] श्लभो नु यथा शिखार्दितो दहनात्प्राक् भयमेति पुष्पकलम्।
स ददर्श विनीतलोचनां नियमक्षामतनुं तथवैताम्।। जा.जी. – 12/52

6. **स्वाभिमानिनी** – दीर्घ वियोग के ताप को सहकर, अतिशय उमंग से, आह्लाद से, विस्मय से, लज्जा से सकुचाती हुई, अन्तर्मन में मिलन की मधुर आशा छिपाये जब राघव की ओर सीता बढ़ी तो राघव के कठोर वचनों से आहत होकर स्तम्भित हो जाती है – सीते! इस तथ्य को समझ लो कि त्रैलोक्य को कम्पित करने वाले रावण को मारकर मैंने यथाशीघ्र तुम्हारा उद्धार किया। अब तुमसे हमारा कोई प्रयोजन नहीं है। अतः अब तुम जहाँ कहीं भी जाना चाहो– जाओ।[1]

'तुम्हारा उद्धार किया' वचन उनके शील, स्वाभिमान के लिए अस्वीकार्य थे। तत्क्षण ही उदीप्त स्वाभिमानिनी सीता ने जवाब दिया –

तृणाय मत्वा विभवान् सह त्वया वनं मया स्वीकृतमार्तिसङ्कुलम्।
मनोऽरतिर्मे परिलक्षितातदा शरीरशुद्धि पुनरद्य लक्ष्यते।।[2]

सामाजिक यश के प्रति इतनी आसक्ति? और मेरे उदात्त चरित्र की ऐसी अमर्यादित लांछना! हे राघव! ऐसा उचित नहीं।[3]

सीता के स्वाभिमान की पराकाष्ठा है जो अपने प्राणप्रिय राघव के द्वारा न्यायोचित्त गरिमा के विरुद्ध कहे गये कथन का प्रत्युत्तर ही नहीं दिया। अपने आत्मबल, स्वाभिमान की दीप्त अग्निशिखा से धधकती अग्नि ज्वालाओं को भी चन्दन–सा शीतल बना दिया।[4]

7. **धर्मपरायणा** – सीता पूर्णतः धर्मपरायणा है। उन्होंने नारी धर्म को उस उच्चतम सोपान पर पहुँचाया है कि युगों–युगों तक अनुसरणीय बन गई। उनका सत्यधर्म अग्नि कसौटी पर स्वर्ण की भाँति दीप्तिमान हुआ। यथा–

मनो न मे राघव पादपङ्कजं गतं यदि क्वापि विमुच्य जीवने।
तदध मां रक्षतु सर्वतोमुखं ह्युशीरशीतो भगवान् स पावकः।।[5]

सबको पावन करने वाला अग्निदेव स्वयं सीता के संस्पर्श से पावन अनुभव कर रहा है। यह है जानकी की धर्मपरायणता की शक्ति।

---

[1] जा.जी. – 12/67
[2] जा.जी. – 15/61
[3] जा.जी. – 15/58,61
[4] जा.जी. – 15/85
[5] जा.जी. – 15/69, 83

8. नारी के सभी रूप एवं अवस्था का सर्वोत्तम सम्मिलन – सीता के व्यक्तित्व में पुत्री, भगिनी, वधू, पत्नी, मां, राजरानी सभी रूपों का आदर्श समन्वय है :

I. **मनमोहक पुत्री –** अनुपमशील, सौन्दर्य, औदार्य सम्पन्न मनोहर, बाल–क्रीड़ाओं से सम्पन्न वह बाला सभी की मनभावन बनी हुई है। यथा –

अहो सुता मे कियती गुणान्विता मितम्पाऽसंकसुकास्तन्धया।
अहो शुभंयुः कियतीति लालयन् चकार सीतां नृपतिर्भुजान्तरे।।[1]

सुकुमारी राजकन्या पिता के लिए प्रीतिपूर्वक भोजन बनाया करती।[2] सीता अपने उत्तम गुणों के कारण जनक की लाडली है। अपने श्रेष्ठ आचरण से पिता जनक का मस्तक सदैव ऊँचा ही रहा और अपने इसी गुण के कारण जनकनन्दिनी माता–पिता की मनभावन पुत्री रही।

II. **सुलक्षणा कुलवधू –** जानकी रघुकुल की मर्यादा के अनुरूप ढलने वाली सुलक्षणा कुलवधू है। सीता प्रातः ही उठकर पतिदेव, सास तथा ससुर की चरणवन्दना करके, कुटुम्बीजनों के लिए सुरुचिपूर्ण भोजन बनाया करती तथा अतिशय प्रेम से खिलाया करती।[3]

विविध प्रकार के गार्हस्थ्य धर्मों का कुशलतापूर्वक निर्वाह करते हुए निःसंदेह जनकनन्दिनी सीता ने अपने सदाचरण से ससुराल में सबका मन जीतकर आदर्श कुलवधू के गौरवमय पद की प्रतिष्ठा को प्राप्त किया।

जानकी ने राजमहल में ही नहीं, वनवास में भी सद्गृहिणी का धर्म निभाकर कुल के गौरव को बढ़ाया। नित्य ऋषि–मुनियों को पाककला में निपुण जानकी अमृतातिशायी अतिथि सत्कार द्वारा सन्तुष्ट किया करती।[4]

III. **प्रेममयी पत्नी –** सीता राम से अनन्य भाव से प्रेम करने वाली प्रेममयी पत्नी है जो सुख–दुःख में छाया की भाँति साथ रहने वाली है।

चन्द्रमा की नियत सहचरी चन्द्रिका के समान राम के चरणों में ही अनुरक्त तथा मर्यादासिन्धु रघुनाथ सरीखे श्रेष्ठ पुरुष को भार्या की गरिमा के अनुरूप ही सीता का आचरण रहा –

चन्द्रिका विधु राङ्गतेवदधत्प्रकाशा मेधवारितवैभवा कुमुदाभिनन्द्या।

---

[1] जा.जी. – 2/35
[2] जा.जी. – 7/63
[3] प्रभुतवत्सेऽपि नृपालमन्दिरे गुणौरुदारैस्तनुकान्तिः सम्पदा। जा.जी. – 2/48
[4] जा.जी. – 9/65,66

मैथिली प्रययौ वनं रघुनाथनाथा सौधसौख्यमपास्य कान्तपदानुरागा।।[1]

राम ने प्रजारंजन के लिए सीता के प्रेम तथा पावनता की 'अग्नि परीक्षा' ली, जिसमें उनका प्रति प्रेम खरा उतरा। देव श्लाघनीय सीता के अनन्य प्रेम के लिए स्वयं राघव ने कहा, मैं जानता हूँ कि सीता का सौम्य हृदय मुझमें ही केन्द्रित है। यह भी जानता हूँ कि मेरी प्रिया पवित्र चरित्र वाली, राममयी, अनन्यशरण तथा स्वप्न में भी किसी और का चिन्तन नहीं करने वाली, मुझमें ही पूर्णतः अनुरक्त है।

IV.वात्सल्यमयी माँ – स्त्री के व्यक्तित्व की पूर्णता है – माँ बनना। प्यारी पुत्री, प्रेममयी पत्नी, माँ बन पुत्रों के गुरुकुल प्रस्थान पर भाव विह्वल हो जाती है जो वन के कठोर जीवन में सहिष्णु बनी रही, वही सीता अपने पुत्रों के बिना एक क्षण भी जीने में समर्थ नहीं है।यह सीता के अपने पुत्रों के प्रति असीम ममता का ही परिचायक है –

कुशलवौ तव कीर्तिकुशीलवो रघुपतेऽत्र ममापि यशः परम्।
ध्रुवमहं तनयस्मृतिकातरा मरणमेव गतास्मि न संशयः।।[2]

अपने पुत्रों के प्रति सीता का स्नेह नैसर्गिक है, किन्तु उनके उदार हृदय में हनुमान के लिए जो पुत्रभाव है, वह उनके शोभन हृदय में छलकते वात्सल्य का चारू प्रस्फुटन है।[3]

निष्कर्ष –

सीता का गरिमामय चरित्र विविध स्पृहणीय गुणों के समन्वय से मण्डित है। सीता में अनन्य भाव से पति भक्ति, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न के साथ निर्दोष वात्सल्य प्रेम, सासुओं के प्रति सेवाभाव, सेवकों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार है। मायका एवं ससुराल में सबके साथ प्रीति एवं सहृदयता है। दया,[4] करुणा, ममता से पूर्ण अतिथि–सत्कार में तत्पर,[5] ऋषि एवं देवपूजन[6] में संलग्न रहने वाली है।

जानकीजीवनम् की सीता मनभावन पुत्री, प्रेममयी पत्नी, सुलक्षणा कुलवधू, स्नेहमयी भगिनी, सुतवत्सला माँ, सहृदया राजरानी की महनीय भूमिका में प्रस्तुत हुई है।

---

[1] जा.जी. – 11/1
[2] जा.जी. – 19/41
[3] जा.जी. – 13/40
[4] जा.जी. – 2/44
[5] जा.जी. – 11/11
[6] जा.जी. – 2/45

सीता का प्रभाव अमित है। उनके पावन व्यक्तित्व के सामने सभी श्रद्धावनत् है। जानकीजीवनम् महाकाव्य में जानकी जी का चरित्र तेजोमय, सरस, मधुर है। उनमें हास–विलास, बाल्यावस्था का अल्हड़पन भी है तो किशोरावस्था में धीरता, मृदुलता भी है। वैवाहिक पथ के सुखद एवं कंटकाकीर्ण पथ में समरसता से बहते हुए अपने चरित्र की उज्ज्वलता से जग को प्रकाशित किया है।